VIDYA
UNIVERSITY PRESS

सुगंधा

हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक

कक्षा 4

Teacher's Resource Book

सुगंधा–4

1. पथ मेरा आलोकित कर दो

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv)

2. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

3. (क) कवि हृदय का अंधकार दूर करना चाहता है।

(ख) कवि जीवन–पथ को आलोकित करने की प्रार्थना कर रहा है।

(ग) नन्हा पथिक चलना सीख रहा है।

(घ) पथिक विश्व के पथ पर चलना सीख रहा है।

(ङ) कवि धरती को स्वर्ग बनाने का वर माँगता है।

❐ व्याकरण-बोध

4. सीख — सीखना उड़ — उड़ना

चल — चलना पा — पाना

5. निर्दिष्ट = न् + इ + र् + द् + इ + ष् + ट् + अ

रश्मियों = र् + अ + श् + म् + इ + य् + ओं

मनोकामना = म् + अ + न् + ओ + क् + आ + म् + अ + न् + आ

विहग = व् + इ + ह् + अ् + ग् + अ

मंगलमय = म् + अं + ग् + अ + ल् + अ + म् + अ + य् + अ

6.

(क) कर → हाथ, किरण

(ख) वर → दूल्हा, वरदान

(ग) पर → पंख, दूसरा

(घ) घर → समान, जोश

❐ योग्यता-विस्तार

7. आलोकित पथ करो हमारा
हे जग के अंतर्यामी,
शुभ प्रकाश दो, स्वच्छ दृष्टि दो
जड़ चेतन सब के स्वामी।

तुच्छ हमारे मन के प्रभु
दुर्विचार सब दूर करो,
प्रेरित हो हम केवल तुमसे
ऐसी हममें शक्ति भरो।

❒ जीवन-मूल्य

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

2. सजा माफ

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv)

2. (क) चौथा कैदी सम्राट अशोक से बात कर रहा था।
(ख) कैदी के परिवार में वह और उसकी बूढ़ी माँ थीं।
(ग) कैदी ने दवाइयाँ चुराईं 'क्योंकि उसकी माँ बीमार थीं, जिनके इलाज के लिए उसके पास पैसे नहीं थे।
(घ) कैदी वैद्य की दुकान पर पकड़ा गया था।
(ङ) पकड़े जाने पर कैदी को कारागार में रखा गया।

3. (क) सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया।
(ख) कलिंग युद्ध के बाद अशोक न्यायप्रियता, प्रजा-पालकता तथा दयालुता जैसे गुणों के कारण प्रसिद्ध हुए।
(ग) तीनों कैदी अपने सम्राट से सजा माफ कराने के लिए झूठ बोल रहे थे।
(घ) चौथे कैदी को किसी से शिकायत इसलिए नहीं थी, क्योंकि वह चोरी करते हुए पकड़ा गया था, और बुरे काम करने वाले को सजा मिलनी चाहिए, यह वह भली-भाँति जानता था।
(ङ) सम्राट ने चौथे कैदी को काम देने की बात इसलिए कही ताकि उसे विवश होकर भविष्य में अनैतिक कार्य न करना पड़े।

❒ व्याकरण-बोध

4. न्यायप्रिय ग्रहण
निर्दोष सिर्फ

5. कवि — कवयित्री सेठ — सेठानी वीर — वीरांगना
श्रीमान — श्रीमती सम्राट — सम्राज्ञी राजा — रानी

6. (क) प्रसिद्ध, शुद्ध (ख) विद्या, विद्यालय
(ग) द्वेष, द्वीप (घ) त्रिशूल, चित्र

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।
8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

3. शिवाजी का क्षमादान

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i) (घ) (iii)
2. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iii)
3. (ख) ✗ (ग) ✗ (च) ✗
4. (क) धृष्ट (ख) अनाथ (ग) प्रातः (घ) गर्व
(ङ) आशा

5. (क) मालवजी शिवाजी की हत्या इसलिए करना चाहता था, क्योंकि उसे पेट की आग को शांत करने के लिए शिवाजी के शत्रु राजा सुभागराय के प्रस्ताव को स्वीकार करना पड़ा था।
(ख) मालवजी के पिता शिवाजी की सेना के सिपाही थे।
(ग) शिवाजी ने मालवजी को अपनी सेना में भर्ती करने की बात इसलिए सोची, क्योंकि उसके साहस और मातृभक्ति ने शिवाजी के मन को जीत लिया था।
(घ) मालवजी ने अपनी माँ को शिवाजी द्वारा मृत्युदंड देने की बात इसलिए नहीं बताई, क्योंकि वह जानता था कि मृत्युदंड की बात सुनकर उसकी माँ उसे जाने नहीं देगी।

❒ व्याकरण-बोध

6.

ओज	= **ओजपूर्ण**	**ओज से भरा हुआ**
साहस	= **साहसपूर्ण**	**साहस से भरा हुआ**
वीरता	= **वीरतापूर्ण**	**वीरता से भरा हुआ**
कायरता	= **कायरतापूर्ण**	**कायरता से भरा हुआ**
महत्त्व	= **महत्त्वपूर्ण**	**महत्त्व से भरा हुआ**
विश्वास	= **विश्वासपूर्ण**	**विश्वास से भरा हुआ**

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8.

समस्तपद	पहला शब्द	विभक्ति-चिह्न	दूसरा शब्द
सेनापति	सेना	में	पति
शयनकक्ष	शयन	का	कक्ष
वीरगति	वीर	की	गति
गौरव-वृद्धि	गौरव	का	वृद्धि
मृत्युदंड	मृत्यु	का	दंड
वीरपुत्र	वीर	का	पुत्र
जीवनदान	जीवन	का	दान

❐ योग्यता-विस्तार

9. हम अपने बचाव के लिए साहस करते हुए उससे बचने का प्रयास करेंगे। ज्योंही वे हम पे वार करना चाहेंगे, हम झट से झुककर नीचे से बाहर निकल जाएँगे एवं बाहर निकलकर जल्दी ही दरवाजा बंद कर देंगे और 'बचाओ-बचाओ' की आवाज लगाएँगे। आवाज़ सुनकर घर में मौजूद अन्य लोग आ जाएँगे और उसे पकड़कर पुलिस को सौंप देंगे। इस प्रकार हमारी जान बच जाएगी।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. शिवाजी के चरित्र में हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देनी चाहिए। साथ ही एक वीर को वीर का सम्मान करना चाहिए।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

4. चींटी : एक सामाजिक प्राणी

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)

2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (iii)

3. (क) चींटियाँ अपना घर बनाने के लिए ऐसा स्थान चुनती हैं, जहाँ वर्षा का पानी न पहुँच सके।

(ख) अधिकतर मजदूर वर्ग की चींटियाँ होती हैं।

(ग) बंदी चींटियों के साथ अनुशासित व्यवहार किया जाता है। इनसे दास का कार्य करवाया जाता है और इन पर कड़ी निगरानी रखी जाती है।

(घ) पाठ में चींटी को एक सामाजिक प्राणी इसलिए बताया गया है, क्योंकि वे संगठित होकर समूह में रहती हैं और एक सामाजिक व्यवस्था का पालन करती हैं।

(ङ) कवि पंत ने चींटियों की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं—

(i) सामाजिक होना—चींटियाँ सामाजिक होती हैं। वे संगठित रहकर सामाजिक व्यवस्थाओं का पालन करती हैं।

(ii) श्रमजीवी—चींटियाँ परिश्रमी होती हैं। वे कड़ी मेहनत से कभी नहीं घबरातीं।

(iii) सुनागरिक होना—चींटियाँ सभ्य नागरिकों की तरह परिवार के सदस्यों के साथ घरों में निवास करती हैं।

❐ व्याकरण-बोध

4. (क) चींटियाँ (ख) टोकरियाँ (ग) कमरे (घ) गलियारे
(ङ) रानियाँ (च) अंडे

5. (क) मित्र (ख) सबल (ग) असामान्य (घ) बाहर
(ङ) जवान (च) नौकर

6. (क) समान — (बराबर) — धरती पर जन्म लेने वाले प्रत्येक प्राणी का समान अधिकार है।
सामान — (वस्तु) — नीरज दुकान का सामान लेने बाजार गया।
(ख) ओर — (तरफ) — हिमालय उत्तर की ओर है।
और — (तथा) — रामू और मोहन मित्र हैं।

7. (क) चमकीला (ख) सुरीला (ग) बर्फीला (घ) रेतीला (ङ) रसीला (च) रंगीला

❐ योग्यता-विस्तार

8. (क) रानी/राजा, सेवक (ख) श्रमिक (ग) सैनिक

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

5. कैसे बनें विद्वान?

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii)

2. (क) (iv) (ख) (v) (ग) (i) (घ) (ii)
(ङ) (iii)

3. (क) अध्ययन (ख) सुगम (ग) सम्मान (घ) अभ्यास
(ङ) सद्‌गुरु के आश्रम

4. (क) यवक्रीत ऋषिपुत्र था, परंतु विद्वान न होने के कारण लोग उसका मान-सम्मान नहीं करते थे।

(ख) यवक्रीत ने इंद्र की तपस्या इसलिए की, क्योंकि वह तपस्या से उन्हें प्रसन्न कर विद्वान बनना चाहता था।

(ग) वर माँगने पर इंद्र ने यवक्रीत से कहा कि बिना कठिन परिश्रम और अध्ययन के विद्या प्राप्त नहीं की जा सकती। इसके लिए सद्गुरु के आश्रम में जाइए और विद्या ग्रहण कीजिए। पूर्वजन्म के संस्कारों और इस जन्म के परिश्रम से विद्या अवश्य प्राप्त होगी।

(घ) यवक्रीत को इस बात की पूर्ण जानकारी हो जाने पर अपनी भूल मालूम हुई कि जिस प्रकार गंगा में बालू डालकर उस पर पुल बनाने की आशा नहीं की जा सकती, उसी प्रकार बिना पढ़े विद्या की आशा नहीं की जा सकती।

(ङ) यह कहानी उसके विषय में है, जो बिना परिश्रम के विद्या ग्रहण करना चाहता है।

❐ व्याकरण-बोध

5. ऋषिपुत्र — ऋषि का पुत्र गंगातट — गंगा का तट
राष्ट्रपिता — राष्ट्र का पिता गुरुभक्त — गुरु का भक्त

6. अपमान, गुप्त, निंदा, अनाश्चर्य, निराशा, विश्राम/आराम

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

6. चतुर चित्रकार

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. खिसियाकर; कायर; तुरंत; अभ्यास।

3. (क) कविता में यमराज का मित्र शेर को कहा गया है, क्योंकि वह एक हिंसक पशु है।

(ख) चित्रकार ने शेर को उसकी तस्वीर बनाने का परामर्श देकर उसे अपनी चतुराई से फुसलाया।

(ग) चित्रकार को नाव में बैठकर ऐसा लगा मानो उसकी जान में जान आ गई हो।

(घ) चित्रकार ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि अब वह दोबारा कागज और कलम के लिए जान जोखिम में नहीं डालना चाहता था। जान से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

❐ व्याकरण-बोध

4. नदी — सरिता सलिला
पहाड़ — पर्वत शिखर
पेड़ — वृक्ष तरु
आँख — नयन नेत्र

5. (क) चित्र + कार = चित्रकार
(ख) मूर्ति + कार = मूर्तिकार
(ग) गीत + कार = गीतकार
(घ) कहानी + कार = कहानीकार

6. चित्र — मित्र जोश — होश
शेर — देर बाँस — साँस
दूर — चूर पास — अभ्यास
तैयार — सरदार डरपोक — रोक

❐ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. इस कविता के और भी शीर्षक हो सकते हैं; जैसे—'चित्रकार और यमराज का मित्र' 'जंगल में चित्रकारी' आदि।

❐ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

7. सोहना

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (ii)

2. (क) (ii) (ख) (v) (ग) (i) (घ)(iii) (ङ) (iv)

3. (क) जब छोटू बच्चों को विद्यालय जाते देखता है तो उसका **मन व्याकुल हो जाता है।**

(ख) छोटू भी ऐसे ही बस्ता लेकर स्कूल जाता था, परंतु अब तो यह सब **ख्वाब ही रह गया।**

(ग) परंतु लज्जा के कारण उसकी **हिम्मत नहीं पड़ती।**

(घ) बड़ा होकर अपना **भविष्य उज्ज्वल करेगा।**

(ङ) उसकी आँखों में उसका गाँव और **उसका भविष्य दिखाई दे रहा था।**

4. (क) सोहना (ख) हाथ (ग) बाल-मन
(घ) सोहना; जगा (ङ) गेंद (च) ट्रे; गिलास

5. (क) सोहना घर-परिवार के साथ नदी-किनारे के गाँव में रहता था। घर में माता-पिता, दादा-दादी और छोटी बहन थे। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था और अपने साथियों के साथ खेला करता था। सुबह-शाम घर के छोटे-छोटे कामों में हाथ बँटाता था।

(ख) सोहना घर से इसलिए भाग गया, क्योंकि स्कूल में किताब खो जाने के कारण अध्यापक के द्वारा थप्पड़ लगा देने व पिताजी के डाँट देने से उसके मन में बैठ गया कि वह घर पर ही नहीं रहेगा।

(ग) ढाबे पर सोहना को जूठे बरतन उठाना, धोना; मेज़ साफ़ करना; चाय-पानी देना व झाड़ू लगाना आदि सभी काम करने पड़ते थे।

(घ) जूठे गिलास धोने के लिए ले जाते समय सोहना का ध्यान सड़क पार खेलते बच्चों की ओर चले जाने के कारण गिलास टूट गया।

(ङ) ढाबे वाले के डंडा उठाने पर सोहना के मन में यह बात आई कि वह इन राक्षसों की मार खाने के लिए नहीं पैदा हुआ है। वह अपने घर जाकर पढ़ेगा और बड़ा होकर अपना जीवन स्वयं सँवारेगा।

(च) घर लौटते समय सोहना की आँखों में पढ़-लिखकर बड़ा होकर अपना जीवन सँवारने का सपना तैर रहा था।

❐ व्याकरण-बोध

6.

क्रिया	**क्रियाविशेषण**
(क) सहलाता था	धीरे-धीरे
(ख) खिलाथी	प्यार से
(ग) भाग खड़ा हुआ	चुपचाप
(घ) लुढ़ककर सो जाता है	कोने में
(ङ) देखकर, काँपने लगा	भयानक

7. सुबह — शाम दिन — रात
मालिक — नौकर प्यार — नफ़रत
टूटना — जुड़ना गाँव — शहर

8.

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
(क) कड़कदार	तेज	(च) मजेदार	स्वादिष्ट
(ख) हवादार	हवा से परिपूर्ण	(छ) मालदार	धनी
(ग) दुकानदार	सौदा बेचनेवाला	(ज) चमकदार	चमकीला
(घ) इज्जतदार	सम्मानित	(झ) धारदार	धारवाला
(ङ) चौकीदार	पहरेदार		

❒ योग्यता-विस्तार

9. (क) यदि सोहना को ढाबेवाला पकड़ लेता तो उसे बहुत मारता तथा आगे से बाँधकर रखता।

(ख) अपने घर पहुँचकर उसने बड़े सुकून का अनुभव किया होगा।

(ग) सोहना को पाकर उसके माता-पिता, दादा-दादी को ऐसा लगा होगा मानो, उनकी उजड़ी दुनिया फिर से बस गई हो।

(घ) मेरे विचार से सोहना पुन: स्कूल अवश्य गया होगा।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11.

मैं खाने की थाली लेकर जा रही थी। थाली में चिकनाई लगी होने के कारण हाथ से छूटकर गिर गई।	मम्मी ने सोचा, टी०वी० देखने के चक्कर में इसने थाली गिरा दी। उन्होंने मुझे बड़ी जोर से डाँट दिया। उनकी वह डाँट मुझे अच्छी नहीं लगी।
फुरसत के समय में मैंने मम्मी से उनकी गलती की शिकायत की कि मम्मी तुमने उस समय मुझे इतनी जोर-से क्यों डाँटा?	मम्मी ने अपनी गलती मान ली कि मुझे उस समय नहीं डाँटना चाहिए था, और उन्होंने मुझे गले से लगा लिया।

❒

8. बीमार का हाल

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iii)

2. 7 5 2 3 6 1 4 8

3. (क) हाल-चाल (ख) चिंता (ग) वापस (घ) कष्ट
(ङ) स्वस्थ

4. (क) लालाजी की पत्नी ने लालाजी से (ख) लालाजी ने अपनी पत्नी से
(ग) पंडितजी ने लालाजी से

5. (क) लोग लालाजी से इसलिए परेशान थे, क्योंकि वे ऊँचा सुनते थे।

(ख) पत्नी ने लालाजी को सूखमल के घर उनका हाल-चाल पूछने के लिए भेजा।

(ग) लालाजी को देखकर पंडितजी यह सोचकर खीज गए कि बीमार अवस्था में पहले से ही हमें लोगों ने बेचैन कर रखा है और अब लालाजी से कहूँगा कुछ और यह सुनेंगे कुछ।

(घ) यह कहानी हमें अत्यंत रोचक लगी क्योंकि बीमार व्यक्ति अत्यन्त चिड़चिड़ा हो जाता है, और यदि हाल पूछने वाला देवीदयाल की तरह ऊँचा सुनने वाला हुआ तो कहानी में चार चाँद लग जाते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

6. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (v) (घ) (ii) (ङ) (i)

7.

हवा	— पवन	वायु	शरीर	— देह	तन
ईश्वर	— परमात्मा	भगवान	जहर	— गरल	विष
पानी	— जल	नीर	घर	— मकान	गृह

8. पुल्लिग — पंडित, डॉक्टर, शरीर, पानी, कमरा
स्त्रीलिंग — कहानी, हवा, पत्नी, पड़ोसिन, दवाई

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

9. सच्चा स्मरण

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iii)

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗
(ङ) ✓ (च) ✓

3. (क) गुरुजी ने सुयोधन से (ख) सुयोधन ने गुरुजी से
(ग) युधिष्ठिर ने गुरुजी से (घ) गुरुजी ने युधिष्ठिर से

4. (क) द्रोणाचार्य ने राजकुमारों को पाठ पढ़ाया कि सत्यं वद। सत्य बोलो। धर्मं चर। धर्म पर चलो। क्रोधं मा कुरु। क्रोध मत करो।
(ख) दूसरे दिन युधिष्ठिर ने पाठ नहीं सुनाया।
(ग) गुरुजी के पूछने पर युधिष्ठिर को छोड़कर सब राजकुमारों ने पाठ को सुनाया।
(घ) अन्य राजकुमारों तथा युधिष्ठिर के पाठ स्मरण करने में यह अंतर था कि अन्य सभी ने पाठ को रट लिया था किंतु युंधिष्ठिर ने पाठ के अनुसार, आचरण करना सीख लिया था।

(ङ) युधिष्ठिर ने देरी से पाठ स्मरण करने का कारण यह बताया कि पाठ तो मैंने उसी क्षण रट लिया था, पर मैं इस रटंत को ही पाठ स्मरण करना नहीं मानता।

(च) द्रोणाचार्य के अनुसार, सच्चा पाठ स्मरण करना यह है कि पाठ की अच्छी बातों का अपने जीवन में पालन किया जाए।

❒ व्याकरण-बोध

5. गुरुदेव ✓ क्षण ✓ आशीर्वाद ✓ कठिनाई ✓
आश्चर्य ✓ ग्रहण ✓ विद्या ✓ स्मरण ✓
युधिष्ठिर ✓ वत्स ✓

6.

लड़ना	— लड़	हँसना	— हँस
रटना	— रट	पूछना	— पूछ
समझना	— समझ	सुनना	— सुन

7. (क) तुम (ख) मुझे (ग) हम (घ) वह (ङ) अपना

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

10. मेरा बचपन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i)

2. 4 7 5 6 1 3 2

3. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

4. (क) गांधीजी का पूरा नाम है—मोहनदास करमचंद गांधी।

(ख) गांधीजी को इस बात का भारी दुख हुआ कि वे झूठे नहीं थे, किंतु असावधानी के कारण उन्हें झूठा बनना पड़ा।

(ग) 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक का गांधीजी के बाल-मन पर यह प्रभाव पड़ा कि चाहे हरिश्चंद्र की भाँति दुख क्यों न उठाना पड़े पर सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए।

(घ) श्रवणकुमार की पितृभक्ति देखकर गांधीजी ने सोचा कि मैं भी श्रवणकुमार की तरह बनूँगा।

(ङ) व्यायाम के प्रति गांधीजी की अरुचि के दो कारण थे। पहला, उनका संकोची स्वभाव कि शिक्षण के साथ व्यायाम का कोई संबंध नहीं है; दूसरा पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा।

❒ व्याकरण-बोध

5. प्राथमिक ✓ दैनिक ✓ शैक्षिक ✓ सामाजिक ✓

6.

राजकोट	— व्यक्तिवाचक	न्याय	— भाववाचक
शिक्षक	— जातिवाचक	कस्तूरबा	— व्यक्तिवाचक
स्वास्थ्य	— भाववाचक	किताब	— जातिवाचक

❒ योग्यता-विस्तार

7. भावार्थ—इन पंक्तियों में बताया गया है कि सत्य से बढ़कर कोई तप नहीं है और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है; इसलिए जिसके हृदय में सच्चाई है उसके हृदय में ही भगवान वास करते हैं। उपर्युक्त भाव को आधार मानते हुए गांधीजी ने अपने मन में सत्यवादिता का विचार धारण किया और इसी के बल पर देश को आजादी दिलाने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

11. रावण का गुरुमंत्र

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

2. (क) (v) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)
(ङ) (iv)

3. (क) विनय (ख) स्वार्थ (ग) छोटा; निर्बल (घ) कल
(ङ) अनुभव; सार

4. (क) रावण से जीतने के बाद भी राम के मुख पर खुशी और आँखों में चमक इसलिए न थी, क्योंकि उन्हें अपनी जीत से बढ़कर एक महान पंडित और परम विद्वान के इस जग से जाने का दुख हो रहा था।

(ख) आरंभ में रावण ने लक्ष्मण को शिक्षा देने से इसलिए मना कर दिया क्योंकि लक्ष्मण विनय और शिष्टाचार भूलकर उनके सिरहाने जाकर खड़े हो गए।

(ग) रावण के अनेक शत्रु इसलिए हो गए क्योंकि उसने अपने बल का प्रयोग दूसरों की भलाई के लिए न करके सदैव अपने स्वार्थ के लिए किया।

(घ) रावण की तीन इच्छाएँ थीं—सीढ़ी द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी को मिला देना, अग्नि को धुएँ से अलग कर देना और मृत्यु को नष्ट कर देना।

(ङ) रावण आज का काम कल पर छोड़ देने के कारण अपनी इच्छाओं को पूरा नहीं कर सका।

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

5.
मरन	—	मरण	भाई	—	भ्रातृ
पैर	—	पाद	हाथ	—	हस्त
सिर	—	शिर	सुरग	—	स्वर्ग
धुआँ	—	धूम्र	मुँह	—	मुख

6. युद्धभूमि गुरुमंत्र
रणक्षेत्र जीवनदीप
लोकहित

7. (क) मरणासन्न (ख) विनय (ग) सिरहाना (घ) सदाचार
(ङ) गुरुमंत्र

❒ योग्यता-विस्तार

8. युद्धभूमि में मरणासन्न अवस्था में पड़े हुए रावण के पास जाने में लक्ष्मण ने यह भूल की कि वे शिष्टाचार भूलकर उसके सिरहाने जाकर खड़े हो गए।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

12. मेरा गाँव

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. (क) निखिल के पिताजी शहर में प्राध्यापक थे।

(ख) अनाज को खेतों से राशन की दुकान तक पहुँचाने के लिए पहले किसान बैलगाड़ियों से सरकारी खरीद भंडार तक पहुँचाते हैं। फिर उसे ट्रकों द्वारा सरकारी गोदाम तक पहुँचाया जाता है जहाँ से यह राशन की दुकानों पर पहुँचता है।

(ग) निखिल ने खेतों में सब्जियों में भिंडी, करेले, तोरी, टमाटर तथा फलों में नींबू और कच्चे पपीते देखे।

(घ) हरदेव ने अपने ताऊजी के पैर छूकर और भाई को हाथ पकड़कर अंदर ले जाकर स्वागत किया।

(ङ) फल और सब्जियाँ खाने के निम्नलिखित लाभ हैं—

(i) हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

(ii) जल्दी से बीमारियाँ हमारा पीछा नहीं करतीं।

(iii) हमारा शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है।

(iv) मन-मस्तिष्क में अच्छे विचार आते हैं।

❐ व्याकरण-बोध

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. (क) भीतर (ख) बहुत (ग) रोज

5.

सुविधा	—	असुविधा	आदर	—	अनादर
सुगंध	—	दुर्गंध	उपस्थित	—	अनुपस्थित
न्याय	—	अन्याय	उचित	—	अनुचित
साधारण	—	असाधारण	उपयोगी	—	अनुपयोगी

6.

क्यारी	—	क्यारियाँ	पुस्तक	—	पुस्तकें
सब्जी	—	सब्जियाँ	दुकान	—	दुकानें
नाली	—	नालियाँ	बात	—	बातें
बैलगाड़ी	—	बैलगाड़ियाँ	भैंस	—	भैंसें

7. (क) लहलहाते (ख) सुखद (ग) सरकारी (घ) छोटी-छोटी

(ङ) कुछ

8. (क) विद्वानों (ख) पेड़ों (ग) खेतों

❐ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

13. नीति के दोहे

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (iv)

2. (क) काल्ह करै सौ आज कर, आज करै सो अब।

(ख) तुलसी मीठे वचन ते, जग अपनो कर लेत।

(ग) रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

3. (क) मन (ख) सुख (ग) वचन (घ) सुई

4. (क) कबीरदास जी के अनुसार, खजूर के पेड़ के रूप में बड़ा होना बेकार है।
(ख) हमें मीठी वाणी बोलनी चाहिए, क्योंकि मीठे वचनों को सुनकर सभी अपने हो जाते हैं।
(ग) तुलसीदास जी ने कठोर वचनों के त्याग को वशीकरण मंत्र बताया है।
(घ) बड़ों को देखकर छोटों को इसलिए नहीं त्यागना चाहिए, क्योंकि जहाँ पर छोटों की आवश्यकता होती है वहाँ पर बड़ों से काम नहीं चल सकता।
(ङ) उपकारी को उसी प्रकार का सुख होता है जैसे मेहँदी बाँटने वाले के हाथ में स्वयं ही मेहँदी का रंग चढ़ जाता है।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) पीड़ा, दर्द, वेदना (ख) पथिक, राही, राहगीर
(ग) विषधर, साँप, फणी (घ) वृक्ष, पादप, विटप
(ङ) गरल, जहर, हलाहल।

6. (क) होय, बोय (ख) दूर, सूर
(ग) कठोर, घनघोर (घ) कुसंग, उमंग
(ङ) तलवारि, मारि (च) संग, मृदंग

7. (क) तुम्हें (ख) हमें (ग) किस (घ) उस
(ङ) मुझे

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

14. काम की महिमा

❐ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii)

2. (क) आचार्य ने पापक से (ख) पथिक ने पापक से
(ग) सेठ ने पापक से (घ) पापक ने आचार्य से

3. (क) प्रसन्न (ख) धनवती (ग) परदा (घ) महिमा
(ङ) व्यवहार।

4. (क) सब बच्चों द्वारा 'पापक-पापक' चिढ़ाने के कारण पापक का मन पढ़ने में नहीं लगता था।

(ख) आचार्य के पास जाकर पापक ने यह कहा कि—आचार्य, मेरा मन पढ़ने में नहीं लगता है। मैं हमेशा यही सोचता रहता हूँ कि इस नाम से किस प्रकार छुटकारा मिले और अपने सहपाठियों के उपहास से बचूँ। इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मेरे नाम को बदलकर कोई और दूसरा नाम रख दें।

(ग) आचार्य ने पापक से कहा कि बेटा! तुम सर्वत्र घूम आओ। लोगों से मिलो और तुम्हें जो भी अच्छा नाम सूझे, मुझे आकर बता देना, मैं तुम्हारा वही नाम रख दूँगा।

(घ) पापक घूमते समय रास्ते में जीवक, धनवती और पंथक से मिला।

(ङ) पापक ने यह नया ज्ञान प्राप्त किया कि नाम से महिमा नहीं बढ़ती, काम से बढ़ती है। नाम तो केवल व्यवहार के लिए है।

❒ व्याकरण-बोध

5.

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
चल	अचल	स्पष्ट	अस्पष्ट
शुभ	अशुभ	हित	अहित
पवित्र	अपवित्र	ज्ञान	अज्ञान

6. (क) कतराना (ख) टकटकी लगाकर देखना

(ग) डराना या धमकाना (घ) बुरा मालूम होना

7. (क) तक्षशिला एक विशाल विश्वविद्यालय है।

(ख) एक विद्यार्थी था, उसका नाम था—पापक।

(ग) उसका मन पढ़ने में नहीं लगता था।

(घ) वह अपने सहपाठियों के उपहास से बचना चाहता था।

(ङ) उसने एक नया ज्ञान प्राप्त किया।

(च) नाम से महिमा नहीं बढ़ती, काम से बढ़ती है।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

15. मलेथा की गूल

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

2. (क) उत्साही (ख) पहाड़ (ग) सपना (घ) सुरंग
(ङ) धैर्य, परिश्रम

3. (क) माधोसिंह ने पत्नी से (ख) पत्नी ने माधोसिंह से
(ग) पत्नी ने माधोसिंह से

4. (क) पानी के अभाव में मलेथा के सारे खेत बंजर पड़े रहते थे।

(ख) नदी का पानी गाँव में इसलिए नहीं आता था, क्योंकि पहाड़ के उस पार से गाँव में पानी लाने का कोई साधन न था।

(ग) माधोसिंह के मन में सदैव यह सपना उभरता रहता था कि यदि नदी का पानी किसी प्रकार हमारे खेतों तक आ जाता, तो हमारे खेत भी हरी-भरी फसलों से लहलहा उठते।

(घ) माधोसिंह अपनी पत्नी को साथ लेकर दृढ़विश्वास के साथ गैंती-फावड़े से पहाड़ काटने के भगीरथ प्रयास में डट गया। उसके धैर्य और साहस को देखकर गाँव के अन्य व्यक्ति भी इस कार्य में जुट गए और तब इस प्रकार उसने दिन-रात एक करके गूल खोदकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

❐ व्याकरण-बोध

5. (i) मैं **तब तक** चैन की नींद नहीं सोऊँगा **जब तक** परीक्षा में अच्छें अंकों के साथ उत्तीर्ण नहीं होता।

(ii) दक्षिण दिशा की ओर गया वानर दल **तब तक** वापस नहीं लौटा **जब तक** सीता का पता नहीं लगा लिया।

(iii) सुर और असुर **तब तक** समुद्र-मंथन करते रहे **जब तक** चौदह रत्न नहीं निकले।

6.

उत्साही	पराक्रमी
साहसी	परिश्रमी
बलिदानी	उद्यमी

7. माधोसिंह ने दृढ़विश्वास के साथ कहा, "यह तो कार्य प्रारंभ करने पर ही पता चलेगा। सोचो तो, इस कार्य से हमारे गाँव का कितना कल्याण होगा?"

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

16. दया का फल

❐ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (ii)

2. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (v) (ङ) (ii)

3. (क) शिकार (ख) झाड़ी (ग) आँसू (घ) जमीन (ङ) सच

4. (क) सुबुक्तगीन गजनी का एक सरदार था।

(ख) सुबुक्तगीन ने हिरण के बच्चे को पकड़कर उसके पैर बाँधकर उसे घोड़े पर लाद लिया।

(ग) शिकारी द्वारा अपने बच्चे को ले जाता देखकर हिरणी की ममता उमड़ आई और वह झाड़ी से बाहर निकल आई।

(घ) हिरणी की दशा (आँखों में आँसू और मुख पर उदासी) देखकर सुबुक्तगीन का हृदय करुणा से भर आया और उसने हिरणी के बच्चे को छोड़ दिया।

(ङ) सुबुक्तगीन ने यह स्वप्न देखा कि उसके सामने एक देवदूत खड़ा है जो उससे कह रहा है कि सुबुक्तगीन तुमने आज एक असहाय हिरणी पर दया की है इसलिए ईश्वर ने प्रसन्न होकर तुम्हें बादशाह बनाने का निश्चय किया है।

❐ व्याकरण-बोध

5. (क) सुबुक्तगीन गजनी का एक सरदार था।

(ख) उसे शिकार करने का बहुत शौक था।

(ग) हिरणी पहले ही एक झाड़ी में छिप गई थी।

(घ) हिरणी को आँखों में आँसू थे।

(ङ) सुबुक्तगीन का स्वप्न सच निकला।

6. (क) को; का (ख) के; की (ग) से; पर (घ) में; के (ङ) ने; का

7.

	कर्त्ता	**क्रिया**
(क)	सुबुक्तगीन	था
(ख)	बच्चा	रह गया
(ग)	हिरणी	देखा
(घ)	देवदूत	खड़ा था
(ङ)	बादशाह	निकल गया

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

17. कंप्यूटर

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv)

2. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

3. (क) कंप्यूटर प्रश्न हल करने वाला एक साधन है।

(ख) कंप्यूटर का आविष्कार सन् 1889 ई० में डॉ० हर्मन हॉलरिथ ने किया।

(ग) कंप्यूटर को मशीनी मानव इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इसकी रचना ठीक मानव के शरीर के समान है।

(घ) किसी भी समस्या को कंप्यूटर की भाषा में हल करने की क्रिया को प्रोग्रामिंग कहते हैं।

(ङ) कंप्यूटर को बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं, डाक विभाग, आयकर, वित्त मंत्रालय, एयर कंपनियों, रेलवे स्टेशनों आदि के कार्यों में प्रयोग किया जाता है।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) हितैषी (ख) आरक्षण (ग) व्यावसायिक (घ) भारतवासी (ङ) वैज्ञानिक

5. विज्ञान — विज्ञान वरदान भी है और अभिशाप भी।
निर्भर — आज मनुष्य पूर्णत: मशीनों पर निर्भर है।
कार्यालय — आज हर कार्यालय में कंप्यूटर अवश्य मिलेगा।
जनसंख्या — भारत की जनसंख्या धीरे-धीरे सब देशों का आँकड़ा पार करने जा रही है।
उपहार — मजदूर मालिक के हाथों उपहार पाकर बड़ा खुश हुआ।

6. भारत सरदार
कर्त्तव्य पर्व
ग्रहण श्रवण
ट्रेन ट्राम

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. 1. मॉनिटर 2. सी०पी०यू० 3. की-बोर्ड 4. माउस

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

18. खेलकूद और व्यायाम

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) बुद्धि के द्वारा किया जाने वाला काम

(ख) किसी प्रकोप के कारण लोगों का अधिक मरना

(ग) प्राणवायु

(घ) स्वास्थ्यवर्धक चीजें

(ङ) व्यायाम करने का स्थान या व्यायामशाला

3. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

4. (क) स्वस्थ रहने से यह लाभ है कि इसके द्वारा हमारा मन प्रसन्न रहता है और हम हर कार्य आनंद व स्फूर्ति से कर सकते हैं।

(ख) शरीर की लगातार उपेक्षा से व्यक्ति बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु का जल्दी ही शिकार हो जाता है।

(ग) स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक क्रिया-कलाप को व्यायाम कहते हैं। शरीर को स्वस्थ और मन को प्रसन्न रखने के लिए व्यायाम अति आवश्यक है।

(घ) व्यायाम करते समय हमें विभिन्न बातों का ध्यान रखना चाहिए, जिसमें पहली सावधानी है—'उपयुक्त व्यायाम का चुनाव'। इसके बाद उपयुक्त समय, व्यायाम की उचित मात्रा आदि निश्चित करनी चाहिए। व्यायाम करते समय यदि थकान का अनुभव हो तो तुरंत बंद कर देना चाहिए। इसका अभ्यास थोड़े से आरंभ करके धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। व्यायाम करते समय नाक से साँस लेना चाहिए, साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि खाना खाने के पश्चात् व्यायाम न करें। व्यायाम के बाद तुरंत नहाना नहीं चाहिए। व्यायाम करने के थोड़ी देर बाद कुछ पौष्टिक पदार्थ; जैसे—दूध, फल का रस आदि लेना चाहिए।

(ङ) "स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।" इस कथन का तात्पर्य यह है कि जब व्यक्ति का शरीर स्वस्थ होगा तभी उसका मन प्रसन्न होगा और उसके मन में अच्छे विचारों का जन्म होगा।

❒ व्याकरण-बोध

5. बेटा—बेटी	दादाजी—दादीजी	बच्चा—बच्ची
रस्सा—रस्सी	सावधान—सावधानी	इसका—इसकी
6. बुढ़ापा — वृद्धावस्था	साँस — श्वास	फुर्ती — फुरती
दूध — दुग्ध	नाक — नासिका	आलस — आलस्य

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

19. हेलेन केलर

❒ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iv) (ग) (iii)

2. **व्याख्या**—प्रस्तुत पंक्ति में बताया गया है कि यदि जीवन का मार्ग किसी समस्या के आ जाने से बाधित हो जाए तो व्यक्ति को अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए। उसी बाधित मार्ग को लेकर नहीं बैठना चाहिए। अपने मन में ईश्वर पर भरोसा रखकर नया मार्ग चुनना चाहिए, क्योंकि ईश्वर बड़ा कारसाज है। वह एक राह बंद करता है तो अनेक राहें खोल भी देता है।

3. (क) ज्वर (ख) बाल-सुलभ (ग) विश्वास (घ) ललक, लगन (ङ) बाधक

4. (क) हेलेन केलर अमेरिका की एक विलक्षण प्रतिभा एवं विश्वप्रसिद्ध महिला थीं। वे जब उन्नीस माह की थीं तो वे तेज ज्वर से पीड़ित हो गईं जिससे उनके देखने, बोलने तथा सुनने की शक्ति खत्म हो गई।

(ख) एनी सुलिवान एक अध्यापिका थीं। उसे टसकंबिया भेजा गया।

(ग) एनी सुलिवान के अथक परिश्रम से हेलेन का जिद्दी स्वभाव नम्र हो गया। उसमें सीखने की ललक और काम करने की लगन पैदा हो गई और उसका वर्षों का गूँगापन मिट गया।

(घ) दृष्टिहीन व्यक्ति ब्रेल लिपि के द्वारा पढ़-लिख सकते हैं।

(ङ) हेलेन के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि शारीरिक अपंगता उन्नति और विकास में बाधक नहीं है, बल्कि अकर्मण्यता और निराशा उन्नति के मार्ग में बाधक हैं। अतएव, कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए धैर्य के साथ अपने मार्ग की बाधाएँ पार करनी चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) बहुवचन (ख) विशेषण (ग) विलोम
(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ङ) व्यंजन

6. एनी हेलेन को लेकर, परिवार से दूर एक बगीचे में बने घर में जाकर रहने लगी। **उसने** जल्द ही हेलेन का स्नेह और विश्वास जीत लिया और **उसको** सिखाया कि मनुष्य जो पाना चाहता है, उसके लिए **उसको** सही तरीके से परिश्रम करना पड़ता है। कुछ दिनों में बात-बात पर झुँझलाने वाली हेलेन नम्र, हँसमुख और सहज बन गई। **उसमें** सीखने और काम करने की ललक पैदा होती चली गई। यहीं बगीचे में एक दिन **उसने** पानी को 'वाट' कहा। **उसका** वर्षों का गूँगापन मिट गया।

7. (क) अकर्मण्य (ख) अपंग (ग) मूक (घ) दृष्टिहीन
(ङ) बधिर (च) ब्रेल

❒ योग्यता-विचार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

20. सोने जैसे दिन हैं इसके

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (iii)

2. भावार्थ—कवि भारत की अनेकता में एकता का वर्णन करते हुए कहता है कि हमारा देश एक बगीचे के समान है। इस बगीचे में पुष्पों के रूप में अलग-अलग धर्मों के लोग निवास करते हैं जो आपस में हिल-मिलकर प्रेमपूर्वक रहते हैं। ये पतझड़रूपी मुसीबतों के आने पर भी बिना घबराए उनका सहर्ष मुकाबला करते हैं।

3. (क) कवि ने भारत का मुकुट हिमालय को कहा है।
(ख) कवि अपने मुँह से भारत की सभ्यता, संस्कृति और सुंदरता की विशेषतापूर्ण बात कहने में संकोच कर रहा है।
(ग) पतझड़ में भी मुसकाते हैं—से कवि का आशय है कि परेशानियों के घेर लेने पर भी धैर्य नहीं खोते हैं।
(घ) भारत के अनेकता में एकता के गुण ने सारे जग हो हरा दिया है।

❒ व्याकरण-बोध

4. (ख) प्रेम प् + र् + ए + म् + अ
(ग) जागृति ज् + आ + ग् + ऋ + त् + इ
(घ) हृदय ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ

5.

सोना	मुकुट	जग	देश	गाना
मुँह	फूल	राजा	रूप	हृदय
नभ	बात	रात		

6. रात — रात्रि, निशा
जग — जगत्, संसार
सोना — स्वर्ण, कंचन
पक्षी — खग, विहग
नदी — सरिता, तटिनी

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।
8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

21. पानी अमृत है

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iv)
2. (क) वर्षा (ख) मुरझा (ग) राजस्थान (घ) सुरक्षित (ङ) रेत
3. (क) राजपूत और उसकी पत्नी ने पानी के अभाव के कारण दम तोड़ दिया।
(ख) पानी को अमृत इसलिए कहा गया है, क्योंकि इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते।
(ग) हम पानी पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं, दाँत साफ करते हैं, नहाते हैं तथा माँ रसोईघर में चाय बनाना, सब्जी धोना, आटा गूँथना और बरतन साफ करना आदि ये सब दैनिक काम पानी की सहायता से होते हैं।
(घ) **खेती-बाड़ी में पानी का उपयोग**—हम पानी का उपयोग करके खेतों को नरम करते हैं। इसके बाद उनकी जुताई करते हैं; फिर फसल बोते हैं। पौधों को बड़ा करने के लिए उनकी नियमित रूप में सिंचाई करते हैं। बिना पानी के खेती-बाड़ी नहीं की जा सकती है।
(ङ) नदियों पर बाँध बनाने के निम्नलिखित लाभ होते हैं—
(i) इनके द्वारा बरसात के प्रलयकारी जल को रोका जाता है।

(ii) इनके द्वारा बिजली का उत्पादन किया जाता है।
(iii) इनके द्वारा मरुभूमि को पानी दिया जाता है।
(iv) इनके द्वारा नहरें निकालकर खेतों की सिंचाई की जाती है।

❒ व्याकरण-बोध

4. हिन्दुस्तान तुर्किस्तान पाकिस्तान

5. (क) ''हलक सूख्यो है, पाणी है?'' वधू ने थोड़ा शरमाते हुए पूछा।
(ख) चाय बनाना, सब्जी धोना, उसे पकाना, आटा गूँथना, बरतन साफ करना—'क्या यह सब पानी के बिना सम्भव हैं?
(ग) ''ना'', सिर हिलाते हुए वधू बोली, ''तू पी।''
(घ) मनुष्य, पशु-पक्षी, पौधे, जितने भी सजीव पदार्थ हैं, सबके लिए पानी आवश्यक है।

6. (क) मरुभूमि (ख) वधू
(ग) शरमाना (घ) प्राचीन
(ङ) पानी (च) दूषित

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. जल व्यर्थ न हो—इसके लिए हमें जल को समुचित मात्रा में उपयोग करना चाहिए। बरतन आदि की साफ-सफाई से बचे पानी को पौधों तथा क्यारियों के सींचने में उपयोग करना चाहिए। पानी की टोंटी हमेशा खुली नहीं रखनी चाहिए। जल-स्रोतों के आस-पास गन्दगी नहीं फैलानी चाहिए।

❒ जीवन-मूल्य

10. जल-प्रदूषण हमारे शरीर में विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है जिसके द्वारा हम हैजा, बुखार, खाँसी, पीलपाँव जैसी अनेक बीमारियों की चपेट में आ जाने हैं। जल-प्रदूषण के कई कारण हैं: जैसे—नदियों, तालाबों के किनारे शौच करना, घर में पानी को ढँककर न रखना तथा कारखानों के दूषित जल को नदी-नालों में प्रवाहित करना।

जल-प्रदूषण की रोकथाम के उपाय निम्नलिखित हैं—
(i) घर-घर शौचालयों की व्यवस्था की जाए।
(ii) नदी-नाला में दूषित जल के प्रवाहित होने पर रोक लगाई जाए।
(iii) सरकार द्वारा इसके लिए उपयुक्त कानून बनाया जाए।
(iv) अधिकाधिक वृक्षारोपण पर बल दिया जाए।

11. जल की बढ़ती समस्या से छुटकारा पाने के लिए जल-संरक्षण आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक उपाय यह है कि बरसात हो तो उसे थाम लें और अपना भू-जल भण्डार सुरक्षित रखे। इससे हमें जरूरत के समय पानी की कमी नहीं होगी। ❑